मर्म चिकित्सा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीएमसी)

प्रशिक्षण केंद्र का नाम:
राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुत्ति, केरल

परिचय:
मर्मचिकित्सा

मर्मचिकित्सा विभिन्न गैर-औषधीय उपचारों में से एक है जिसका आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानव शरीर की रचना और कार्यप्रणाली की गहरी समझ पर आधारित है जो जटिल प्रक्रियाओं के लिए विभिन्न जोड़-तोड़ तकनीकों का उपयोग करके निवारक और चिकित्सीय स्वास्थ्य लाभ हेतु शरीर के विभिन्न बिंदुओं या क्षेत्रों का उपयोग करता है। मर्म, परिभाषा के अनुसार, शरीर में प्राण (जीवन शक्ति) के विभिन्न स्थान या विशिष्ट स्थान हैं। वेदों से लेकर महाकाव्यों तक प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मर्मचिकित्सा की मूल अवधारणाओं का अच्छी तरह से वर्णन किया गया है। ऐसे उपचारों का चिकित्सकों ने नैदानिक अभ्यास में प्रयोग किया और अपनाया तथा ऐसे उपचारों की सुरक्षा समय की कसौटी पर खरी उतरी है।

मर्म के ज्ञान को अत्यधिक गोपनीय रखा जाना एक कारण है जिसके कारण सामान्य उपचार पद्धतियों से ज्ञान की इस शाखा का धीरे-धीरे ह्रास होता गया लेकिन अब भी कुछ चुनिंदा लोग ऐसे हैं जो इस प्राचीन कला के अच्छे जानकार हैं और इस परंपरा को जीवित रखने के साथ-साथ इस दुनिया में विज्ञान का प्रचार-प्रसार भी कर रहे हैं। केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद ने पहल की है, जिसमें सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार के ज्ञान को मर्मचिकित्सा के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा प्रलेखित और संकलित किया गया ताकि इस ज्ञान को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके और इसे आयुर्वेद नैदानिक अभ्यास की मुख्यधारा में लाया जा सके। इस प्राचीन विज्ञान को मुख्यधारा में लाने और आयुर्वेद चिकित्सकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए, उचित प्रशिक्षण मॉड्यूल की योजना बनाई गई है।

चूंकि मर्मचिकित्सा में उपयोग की जाने वाली कई तकनीकें/तरीके/प्रक्रियाएं अप्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा किए जाने पर गंभीर नुकसान पहुंचा सकती हैं, इसलिए इन तकनीकों का अभ्यास विशेषज्ञ चिकित्सक से उचित प्रशिक्षण के बाद ही किया जाना चाहिए। मर्मचिकित्सा की तकनीकों/विधियों/प्रक्रियाओं के उचित निष्पादन के लिए क्षेत्र विशेषज्ञों की देखरेख में उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, विभिन्न परंपराओं के बीच कई भिन्नताएं हैं जिन्हें छात्रों को किसी भी भ्रम से बचाने के लिए हल करने की आवश्यकता है। कुछ मर्म बिंदुओं के हेरफेर से लाभ की तुलना में संभावित नुकसान अधिक है, जिसे छात्रों तक उचित रूप से पहुंचाने की आवश्यकता है। इन उद्देश्यों के साथ, आयुर्वेद स्नातकों के लिए मर्मचिकित्सा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों को शामिल करते हुए एक माह की अवधि का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान, 21 जून 1971 को सीसीआरएएस के अंतर्गत शुरू किया गया था और यहाँ पिछले कुछ वर्षों में बुनियादी सुविधाओं एवं ओपीडी तथा आईपीडी दोनों में इलाज के लिए रोगियों की संख्या के मामले में काफी वृद्धि हुई है। संस्थान साल में दो बार एक माह का मर्म चिकित्सा प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम (सीसीएमसी) आयोजित कर रहा है।

उद्देश्य:
मर्म चिकित्सा को मुख्यधारा में लाना और आयुर्वेद चिकित्सकों को उचित प्रशिक्षण देना।

शैक्षणिक योग्यता:
किसी भी विश्वविद्यालय से बी.ए.एम.एस.

आयु सीमा:
कोई आयु सीमा नहीं

पाठ्यक्रम का माध्यम:
हिन्दी/अंग्रेजी

शैक्षणिक सत्र:

राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान साल में दो बार एक माह का मर्म चिकित्सा प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम (सीसीएमसी) आयोजित कर रहा है। प्रत्येक बैच में आयुर्वेदिक स्नातकों के 20 उम्मीदवार शामिल होते हैं और इसका उद्देश्य मर्मचिकित्सा के सिद्धांत और व्यावहारिक पक्षों का बुनियादी अनुभव प्रदान करना है। यह कोर्स राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी) के आयुर्वेद प्रशिक्षण प्रत्यायन बोर्ड (एटीएबी) द्वारा मान्यता प्राप्त है।

प्रवेश प्रक्रिया:

यह सीसीएमसी पाठ्यक्रम मेडिकल प्रैक्टिशनर्स और बीएएमएस के सेवारत उम्मीदवारों के लिए उपलब्ध है। इच्छुक व्यक्ति परिषद की वेबसाइट http://www.ccras.nic.in/ से आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं और मेडिकल डिग्री सर्टिफिकेट तथा मेडिकल रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट की प्रतियों के साथ आवेदन कर सकते हैं। सेवारत उम्मीदवारों को उचित माध्यम से और सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के साथ ही आवेदन करना चाहिए।

सभी उचित रूप से भरे हुए आवेदन निदेशक, एनएआरआईपी, चेरुतुरुत्ति पीओ- 679531 को ई-मेल ccmc.narip@gmail.com या nrip.cheruthuruthv@gmail.com पर भेजे जाने चाहिए। प्रवेश पहले आओ पहले पाओ के आधार पर दिया जाता है। अभ्यर्थियों के चयन में निदेशक/प्रभारी का निर्णय अंतिम होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क और भुगतान का तरीका:

भारतीय नागरिकों के लिए पाठ्यक्रम शुल्क 15,000/- रुपये है (आयुष मंत्रालय द्वारा समय-समय पर निर्धारित)। पाठ्यक्रम शुल्क का भुगतान डिमांड ड्राफ्ट (डीडी) से किया जा सकता है। डीडी, एनएआरआईपी, चेरुतुरुत्ति के नाम पर, एसबीआई, शोरनूर (आईएफएससी: एसबीआईएन0000760) में देय होनी चाहिए या पाठ्यक्रम शुल्क खाते में भुगतान (खाता संख्या -10347493316) के माध्यम से भेजा जा सकता है। शुल्क प्रेषण का विवरण ईमेल (nrip.cheruthuruthy@gmail.com) पर प्रेषित किया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम शुल्क वापसी योग्य नहीं है।
अभ्यर्थियों के चयन में निदेशक/प्रभारी का निर्णय अंतिम होगा। यदि कोई छात्र एक ही समय में कहीं और किसी समान या भिन्न पूर्णकालिक पाठ्यक्रम में प्रवेशित पाया जाता है, तो उसका प्रवेश रद्द माना जाएगा।

छात्रावास सुविधाएं:
प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को आवास एवं भोजन की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। इस पाठ्यक्रम के छात्रों के लिए कोई छात्रावास सुविधा उपलब्ध नहीं है।

उपलब्ध सीटें:
सीटों की संख्या: प्रति बैच 20 सीटें।

प्रशिक्षण संस्थान:

राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान (एनएआरआईपी), चेरुतुरुत्ति, त्रिशूर जिला, वाया शोरनूर, केरल- 679531, फोन 04884-262543

ई-मेल: nrip-cheruthuruthy@gov.in और nrip.cheruthuruthy@gmail.com.

निदेशक/प्रभारी, एनएआरआईपी, चेरुतुरुत्ति, पाठ्यक्रम के समग्र प्रभारी होंगे। निदेशक/प्रभारी एक सहायक निदेशक (आयु.)/अनुसंधान अधिकारी (आयु.) को पाठ्यक्रम समन्वयक के रूप में नामित करेंगे।

पाठ्यक्रम का डिज़ाइन एवं अवधि:

यह एक पूर्णकालिक, नियमित और गैर-आवासीय पाठ्यक्रम है और कक्षाएं सभी कार्य दिवसों में सुबह 9:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक और दोपहर 2.00 बजे से शाम 4:00 बजे तक आयोजित की जाएंगी।

पाठ्यक्रम
पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय शामिल होंगे-
1. आयुर्वेद मर्म, कलारीमर्म और वर्मा शास्त्र के विभिन्न बुनियादी सिद्धांतों का परिचय। स्थानों, वर्गीकरण, चोट के संकेतों और मर्म/वर्मा बिंदुओं को उत्तेजित करने के तरीकों का विवरण ।

2. विभिन्न मर्म तकनीकों और वर्मा और नाड़ी की उत्तेजन में व्यावहारिक प्रशिक्षण। मर्मचिकित्सा के माध्यम से मस्कुलो-स्केलेटल रोग, तंत्रिका तंत्र के रोग और अन्य रोगों सहित विभिन्न रोगों के प्रबंधन में व्यावहारिक प्रशिक्षण।

3. मर्मचिकित्सा से संबंधित विभिन्न पक्षों जैसे ट्रॉमेटोलॉजी, ऑर्थोपेडिक्स, स्पोर्ट्स मेडिसिन, रेडियोलॉजी एवं मर्म फार्मेकोलॉजी में उन्नत प्रशिक्षण।

पाठ्यक्रम और भ्रमण कार्यक्रम के व्याख्याता/प्रशिक्षक:

मर्मचिकित्सा के विभिन्न क्षेत्रों जैसे आयुर्वेद मर्म, कलारीमर्मा और वर्मा शास्त्र के विशेषज्ञ पाठ्यक्रम के लिए विजिटिंग फैकल्टी होंगे। एनएआरआईपी के अनुसंधान अधिकारी, जिन्होंने मर्मचिकित्सा में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, वे भी पाठ्यक्रम के प्रशिक्षक होंगे। पाठ्यक्रम अवधि के दौरान छात्रों के लिए कलारी भ्रमण होगा।

उपस्थिति:
छात्र को परीक्षा में बैठने की अनुमति देने हेतु सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों कक्षाओं में 75% उपस्थिति आवश्यक है।

मूल्यांकन और परीक्षा:
एक महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूरा होने पर, मूल्यांकन के लिए एक सैद्धान्तिक परीक्षा (बहु-वैकल्पिक) आयोजित की जाएगी। उसके बाद उम्मीदवारों को उनके द्वारा प्रबंधित मर्मचिकित्सा से संबंधित न्यूनतम दस मामलों को एकत्र करने के लिए एक माह का समय दिया जाएगा। एक माह के बाद, एक ऑनलाइन साक्षात्कार और प्रस्तुत मामलों का मूल्यांकन एक साक्षात्कार पैनल द्वारा आयोजित किया जाएगा जिसमें बाहरी और आंतरिक विद्वान शामिल होंगे।

प्रमाणपत्र प्रदाय:
सैद्धांतिक और व्यावहारिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले योग्य उम्मीदवारों को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

प्रशिक्षण का परिणाम:
इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य मर्मचिकित्सा के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का बुनियादी ज्ञान प्रदान करना है।

विवाद:
इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबंधित सभी विवाद वलाथोल ग्राम पंचायत के अधिकार क्षेत्र में आएंगे।

CERTIFICATE COURSE ON MARMA CHIKITSA (CCMC)

NAME OF THE TRAINING CENTER:

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma, Cheruthuruthy, Kerala.

INTRODUCTION:

MARMACHIKITSA

Marmacikitsā is one among the various non-pharmacological therapies having an important place in Āyurveda. It is based on a deep understanding of the design and working of the human body which utilizes various points or areas of the body for preventive and therapeutic health benefits using the various manipulative techniques to complex procedures. Marma, by definition, are the various seats or specific locations of Prāṇa (life force) in the body. The basic concepts of Marmacikitsā are well described in the ancient Indological texts right from Vedas to Epics. Such therapies are practiced and adopted by physicians in the clinical practice and the safety of such therapies stood the test of time.

The knowledge of Marma was kept highly secretive nature is one of the reasons which lead to the gradual diminution of this branch of knowledge from the general healing practices. But even now, there are selected few individuals who are well versed of this ancient art and keeping the tradition alive and also propagating the science in this world. The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences has taken initiatives wherein such knowledge, both theoretical and applied were documented from various experts of Marmacikitsā and compiled so as to preserve this knowledge for future generations and bring it to the mainstream of Āyurveda clinical practice. In order to mainstream this ancient science and impart proper training to Āyurveda doctors, proper training modules are planned.

Since many techniques/methods/procedures used in Marmacikitsā can cause potential serious harm if done by untrained persons, these techniques are to be practiced only after proper training under expert practitioner. Proper hands on training under supervision of field experts are required for proper execution of techniques/methods/procedures of Marmacikitsā. Also, there are numerous variations among the various traditions which needs to be addressed to avoid any confusion to the student. Manipulations of few Marma points have more potential harm than benefits which needs to be properly conveyed to the student. With these objectives, a training course of one-month duration for graduates of Āyurveda has been developed covering the theoretical and practical aspects of Marmacikitsā.

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma was started on 21st June 1971 under CCRAS and has, over the years, grown tremendously in terms of infrastructural facilities and the

numbers of patients being treated in both OPD and IPD. The institute is conducting a Certificate Course in Marma Chikitsa (CCMC) for one month twice a year (May and October).

Objectives:

To mainstream Marmacikitsā and to impart proper training to Āyurveda doctors.

Basic Qualification

BAMS from any university

Age Limit:

No age limit

Medium of Instruction:

Hindi / English.

Academic Session:

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma is conducting a Certificate Course in Marma Chikitsa (CCMC) for one month (May and October) twice in a year. Each batch consists of 20 candidates of Āyurvedic graduates and is aimed to provide basic exposure to the theory and practical aspects of Marmacikitsā. This Course is accredited by the Ayurveda Training Accreditation Board (ATAB) of Rashtriya Ayurveda Vidyapeeth (RAV).

Admission procedure:

This CCMC course is open to the Medical Practitioners and service candidates of BAMS. Interested persons may download the application form from the council's website http://www.ccras.nic.in/ and apply with the copies of Medical Degree Certificate and Medical Registration Certificate. Service candidates should apply through proper channel and with permission of the competent authority.

All properly filled applications should be sent addressing the Director, NARIP, Cheruthuruthy to the mail address - ccmc.narip@gmail.com or nrip.cheruthuruthv@gmail.com. Admission is based on first come first serve basis. The decision of the Director/In-charge will be final for selection of candidates.

Course Fee and mode of payment:

The Course fee for Indian Nationals is Rs 15,000/- (as prescribed by Ministry of Ayush from time to time).

Course fee may be paid as Demand Draft (DD) or may be remitted through Account Transferring (Account Number-10347493316). The DD may be drawn in favor of NARIP, Cheruthuruthy, Payable at SBI, SHORANUR (IFSC: SBIN0000760). Details of the fee remittance should be intimated via email (nrip.cheruthuruthy@gmail.com).

Course fee is non-refundable

The decision of the Director/ In-charge will be the final in selection of candidates. If any student is found to be joining any similar or different full-time course elsewhere at the same time, his/her admission will be deemed canceled.

Hostel facilities:

Accommodation and boarding of the participants in the training course should be arranged by themselves. No Hostel facility is available for the students of this course.

Intake capacity:

Number of Seats: 20 Seats per batch.

Training Institute:

National Ayurveda Research Institute for Panchakarma (NARIP), Cheruthuruthy, Thrissur Dist., Via Shoranur, Kerala-679531, Ph. 04884-262543,

E-mail: nrip-cheruthuruthy@gov.in & nrip.cheruthuruthy@gmail.com

Director/In-charge of NARIP Cheruthuruthy will be the overall in-charge of the course. Director/In-charge will nominate one Assistant Director (Ay.)/Research Officer (Ay.) as the course coordinator.

Design & Period of Course:

This is a full time, regular & non-residential course and the classes will be conducted in all working days from 9:30 AM to 1:00 PM and 2.00 PM to 4:00 PM.

Curriculum

The course will cover the following topics

1. Introduction to various basic principles of Āyurveda marma, kalarimarma and varma shastra. Description of marma/varma points with locations, classification, signs of injury and methods of stimulation of marma/varma points.

2. Practical training in various marma techniques and stimulation of varma and nadi. Practical training in the management of various diseases including Musculo-skeletal diseases, diseases of Nervous system and other diseases through Marmacikitsā.

3. Advanced training in various aspects related to Marmacikitsā such as traumatology, orthopedics, sports medicine, radiology and marma pharmacology.

Faculty of the Course and Tour Programme:

Experts from different schools of Marmacikitsā viz Ayurveda marma, Kalarimarma and Varma shastra will be the visiting faculty for the course. Research officers of NARIP, who have undergone training in Marmacikitsā will also be the faculty for the course. There will be a kalari visit for the students during the course period.

Attendance:

75% of the attendance both in theory and practical is essential to allow the student for the examination.

Assessment and Examination:

On completion of one month training programme, a theory exam (MCQ type) will be conducted for assessment. After that the candidates will be given one month time to collect minimum of ten cases managed with Marmacikitsā by them. After one month, an online viva and assessment of the submitted cases will be conducted by an interview panel consisting of external and internal faculties.

Award of Certificate:

Eligible candidates who have passed the theory and practical examination will be issued certificates.

Outcome of Training:

The course is aimed to provide basic exposure to the theory and practical aspects of Marmacikitsā.

Dispute:

All disputes pertaining to this training programme shall fall within the Vallathol Grama Panchayath jurisdiction.